वेंडी डोनीज़र का हिंदू इतिहास

शंकर शरण*

वेंडी डोनीज़र शिकागो विश्वविद्यालय में धार्मिक अध्ययन विभाग (डिवीनिटी स्कूल) की प्रोफ़ेसर हैं। उनकी प्रसिद्धि भारतविद् (इंडोलॉजिस्ट) के रूप में है। पश्चिम में हिंदू धर्म और प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों पर उन्होंने सबसे अधिक संख्या में पी.एच.डी. करवाई है। वेंडी हिंदू धर्म के अध्ययन की इतनी बड़ी हस्ती हैं कि उन्हें 'क्वीन ऑफ़ हिन्दुइज़्म' कहा जाता है। किंतु इधर उनकी पुस्तक 'द हिंदूज़–एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री' (2009) को इस के प्रकाशक पेंग्विन-वाइकिंग ने बार से वापस ले लिया। इस पुस्तक पर भारत में कुछ हिंदू संगठनों ने यह कहते हुए मुकदमा किया था कि इसमें गलत तथ्य और हिंदू धर्म तथा देवी-देवताओं के बारे में दुराग्रही, अपमानजनक बातें हैं। मुकदमें के दौरान अंततः दोनों पक्षों ने आपसी समझौता कर लिया। इसके अंतर्गत प्रकाशक ने पुस्तक की छपी प्रतियों को वापस कर लिया। निस्संदेह, अकादमिक, वैचारिक पुस्तकों को प्रतिबंधित करने जैसी माँगें गलत हैं। जिन पुस्तकों से असहमति हो, उसके उत्तर में प्रतिवादी पुस्तकें प्रकाशित की जानी चाहिए। ताकि स्वस्थ विचार-विमर्श के साथ ज्ञान का विकास हो। इस लेख में वेंडी डोनीज़र की इस पुस्तक और उनके लेखन की एक संक्षिप्त समालोचना प्रस्तुत की जा रही है।

वेंडी डोनीज़र लंबे समय से हिंदू धर्म, हिंदू रीति-रिवाज़, पर्व-त्यौहार, देवी-देवताओं की एक काम-केंद्रित व्याख्या करती रहीं हैं। उनके अपने शब्दों में, 'अडल्स हक्सले' ने एक बार कहा था कि "बुद्धिजीवि वह होता है जिसने सेक्स से भी अधिक रुचिकर कोई चीज़ खोज ली हो। भारत संबंधी अध्ययन में ऐसा कोई विकल्प ही नहीं है..."

(भारत में) सेक्स ईश्वर का दूसरा नाम है? या कि ईश्वर सेक्स का दूसरा नाम है? या कि दोनों ही बात हैं।[1] अर्थात् भारतीय धर्म संस्कृति, शास्त्रों का अध्ययन करना और काम-क्रिया या कल्पना का सुख उठाना एक जैसा कार्य है! यह निश्चित् रूप से एक विचित्र दृष्टिकोण है, पर यह वेंडी डोनीज़र की भारत संबंधी विद्वता का बुनियादी दर्शन, उनका **सिग्नेचर-ट्यून** है।

* *प्रोफ़ेसर,* डिपार्टमेंट ऑफ़ पोलिटिकल साइंस फेकल्टी ऑफ़ आर्ट्स, दि एम एस यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा, वडोदरा-390 002, गुजरात

उदाहरण के लिए, वेंडी हिंदू धर्म के अध्ययन के मूल स्त्रोतों की चर्चा कैसे करतीं हैं, यह उनकी छब्बीस वर्ष परानी पुस्तक 'टेक्सचुअल सोर्सेज़ फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ हिन्दुइज़्म' (1988) में भी देख सकते हैं। पुस्तक में वेदों और बुनियादी हिंदू ग्रन्थों की जानकारी दी गई है। इसमें विभिन्न अध्यायों के अंतर्गत उप-खंडों के शीर्षक इस प्रकार हैं- ''कुत्तों को मारना'', ''स्त्रियों का मज़ाक उड़ाना'', राजा जनता के साथ मैथुन करता है'', ''किस तरह की स्त्री के साथ संभोग न करना'', ''किस तरह की स्त्री के साथ संभोग करना'', ''वैसी विवाहिता स्त्री जो तुम्हारे साथ संभोग करेगी'', ''वैसी विवाहिता जो तुम्हारे साथ संभोग नहीं करेगी'', आदि।[2] ऐसे शीर्षकों के अंतर्गत वेंडी डोनीज़र ने हिन्दुइज़्म के अध्ययन का मार्गदर्शन किया है।

इसलिए, स्वाभाविक है कि देश-विदेश में अनेक भारतीय विद्वान और अवलोकनकर्ता वेंडी की आलोचना भी करते रहे हैं कि उन्होंने हिंदू धर्म को विकृत करके प्रस्तुत किया। इस प्रकार, अमेरिका, यूरोप के अनजान युवाओं और नीति-निर्माताओं को भ्रमित किया। इससे भारत के प्रति पश्चिमी देशों, वहाँ की प्रभावशाली अकादमिक संस्थाओं का नज़रिया भी दुष्प्रभावित हुआ। अत: जिस तरह वेंडी डोनीज़र के लेखन को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, उसी तरह उनके आलोचकों की बातों को भी स्थान मिलना चाहिए। विशेषकर जब वह तथ्यों, तर्कों के आधार पर की जाए।

वेंडी की सबसे अधिक आलोचना इसी बात के लिए होती है कि वे हिंदू धर्म, हिंदू इतिहास में सब कुछ सेक्स के दृष्टिकोण से ही देखने, खोजने की कोशिश करती हैं। जैसे, जब उनकी पुस्तक 'द हिंदूज – एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री' (2009) पहले पहल छपी, तो भारत में अंग्रेजी साप्ताहिक 'आउटलुक' (26 अक्तूबर, 2009 अंक) ने उनका साक्षात्कार लिया था। उस साक्षात्कार में भी 'रामायण' संबंधी सारी चर्चा सेक्स केंद्रित है। मानो पूरी रामायण में राम-सीता, सीता-लक्ष्मण, सीता-रावण तथा केकयी-दशरथ के सेक्स-संबंध या सेक्स-भावनाएँ ही केंद्रीय बातें हों। वेंडी के अनुसार दशरथ 'सेक्स-एडिक्ट' थे, राम भी वैसे ही 'सेक्स-एडिक्ट' होने के कगार पर थे, जब उन्होंने सीता को निकाल बाहर कर दिया। साक्षात्कार में वेंडी की केंद्रीय बात सुर्खियों में इन शब्दों में रखी गई थी, "राम सीता के साथ बड़े खुश थे... हर तरह के मज़े किए. ..और फिर उन्होंने उसे बाहर निकाल फेंका।" (राम वाज़ हैप्पी विद् सीता...इन्डलिंज़िग इन एवरी वे...एंड देन ही थ्रू हर आउट।[3]

इस तरह की बातें 'वाल्मीकि' 'रामायण' में नहीं हैं। पर वेंडी कहती हैं कि 'वाल्मीकि' 'रामायण' में भी वैसे प्रसंग 'रहे होंगे', जिन्हें बाद में 'ब्राह्मणों ने हटा दिया होगा'। पर यह वे केवल अनुमान से कहती हैं, इसका कोई प्रमाण नहीं देती। इसी तरह, 'संभवत:' कहकर वे बड़े-बड़े दावे करती रही हैं। उनके शिष्यों के शोध प्रकाशनों में भी इसी तरह प्राचीन हिंदू ग्रंथों की मनमानी व्याख्या मिलती है। गंभीरता से परखने पर दिखता है कि वैसे दावे करते हुए कुछ पक्के प्रमाण देने या ढूँढ़ने की चिंता तक नहीं की गई है। बल्कि कई बार दूसरों के शब्दों में अपने मनमाने अर्थ देने और घाल-मेल की प्रवृत्ति झलकती है। उदाहरण के लिए, वेंडी के अनुसार –

"वाल्मीकि रामायण में एक अध्याय है जहाँ राम सीता के साथ बहुत खुश हैं, साथ-साथ शराब पीते हैं ('ड्रैंक वाइन टुगेदर'), दोनों अकेले हैं, केवल सेक्स क्रिया ही नहीं, बल्कि हर तरह से मज़े कर रहे हैं और बस अगले ही अध्याय में राम कहते हैं मैं तुम्हें निकाल बाहर करूँगा। तो मेरा कहना है कि इन दोनों चीज़ों में क्या संबंध है? और इसका क्या मतलब है कि राम जानते हैं कि दशरथ, उनके पिता ने अपने को सार्वजनिक रूप से गिरा लिया है (डिसग्रेस्ड हिमसेल्फ), क्योंकि अपनी जवान और खूबसूरत बीवी से उनका लगाव है। तो मैं रामायण के जहाँ-तहाँ पड़े टुकड़ों को इकट्ठा कर रही हूँ और बता रही हूँ कि यह सब असंबद्ध नहीं है।"[4]

इस कथन को ध्यान से पढ़ें तो वेंडी डोनीज़र की वैचारिक गड़बड़ियाँ एक साथ दिखती हैं। पहली बात, वे 'वाल्मीकि' के वज़न के सहारे ही अपनी उल्टी-सीधी भी चलाना चाहती हैं। क्योंकि 'वैकल्पिक' इतिहास लिखने का दावा करने के बावजूद किसी अन्य स्त्रोत का उन्हें आधार नहीं मिलता। अन्यथा वे 'वाल्मीकि' के अलावा किसी के द्वारा लिखी कथा के 'टुकड़े' बतातीं। लेकिन ऐसा न करके, वे वाल्मीकि के ही लेखन का अपना सेक्सी, विकृत पाठ करती हैं। फिर स्वयं विकृत किए गए पाठ को 'सुसंबद्ध' करने का नाम देती हैं। जबकि किसी ठोस सामग्री का वेंडी के पास इतना अभाव है कि राम-कथा के संदर्भ में ईसा पूर्व अवधि की चर्चा करने के बाद सीधी भक्ति-काल पर चली आती हैं। अर्थात् बीच के पंद्रह-सत्रह सौ वर्षों के बारे में उनके पास कोई स्त्रोत प्रमाण नहीं कि भारत में रामकथा क्या थी, कैसी थी। उसी तरह, भक्ति-काल के बाद भी वे सीधे बीसवीं सदी के यूरोपीय लेखकों या रोमिला थापर, ए.के. रामानुजन आदि वर्तमान कालीन लेखकों के ही हवाले से ही अपनी मनपसंद व्याख्याएँ प्रस्तुत करती हैं। इससे साफ झलकता है कि वेंडी ने अपने पूर्व-निर्धारित निष्कर्षों के अनुरूप जहाँ-तहाँ से कैसी भी सामग्री जुटाने की विधि अपनाई है।

'रामायण' संबंधित ऊपर उद्धृत वेंडी के वक्तव्य में अकादमिक दृष्टि से हल्कापन है। उसमें बिना प्रमाण के नव-प्रस्तुति का खोखला दावा झलकता है। वहाँ और भी दावे हैं, जिनमें बिना प्रमाण घोषणाएँ मिलती हैं। जैसे, 'दसवीं सदी में राम के मंदिर बनने लगे, जब रामायण में मिलावट या काट-छाँट होने लगी। ये दोनों प्रवृत्तियाँ एक साथ उभरीं।' इस दावे के पक्ष में वेंडी ने कोई प्रमाण नहीं दिया है। आज का श्रीलंका वह लंका नहीं है, जिसका वर्णन रामायण में है, यह कहने के लिए वेंडी रोमिला थापर का सहारा लेती हैं। पुस्तक में भी कई दावों के लिए वेंडी ऐसे ही किसी आज के पश्चिमी लेखकों के हवाले से सब कुछ इस तरह रखती हैं, जैसे उनमें संदेह की गुंजाइश कहाँ!

उसी साक्षात्कार में वेंडी कहती हैं, "कुछ लोग कहते हैं कि वास्तव में लक्ष्मण को सीता से प्रेम हो गया था, जो तुलसीदास तो नहीं कहते, न वाल्मीकि कहते हैं। फिर कुछ कहानियों में सीता को रावण की बेटी बताया गया है। बिलकुल हाल तक ऐसा था कि किसी का यह दावा नहीं था कि रामायण को केवल एक ही तरीके से कहा जाना है।... भारत में हर कोई जानता है कि कहानियाँ कई तरह से कही जाती हैं।"[5] यहाँ भी वेंडी अपनी पसंद की विचित्र कथाओं का स्त्रोत नहीं बतातीं।

जबकि वे जानती हैं कि स्त्रोत का वज़न होता है। मगर 'वाल्मीकि', 'तुलसी' आदि के नाम खूब लेने के बावजूद वे अपनी रंग-बिरंगी, कामुक, विकृत या 'वैकल्पिक' कहानियों के लेखक, वाचक, कथा-स्त्रोत आदि का कोई नाम नहीं लेतीं। यह तो बौद्धिक दुर्बलता या मनमानी ही है कि अपनी पसंद की मनतरानियों या काम-विकृत फंतासियों को 'लोग कहते हैं' जैसे गोल-मटोल आधार पर इतिहास के नाम पर प्रस्तुत करें। बिना बताए, कि वे कौन से लोग हैं?

बौद्धिक मनमानी का एक अंदाज़ यह भी हो सकता है कि चूँकि 'वाल्मीकि', 'तुलसी', कम्बन आदि लेखकों के रूप में रामकथा के कई पाठ हैं। तो एक पाठ मेरा भी रहे! यानि यदि मुझे व्याभिचार, बलात्कार, विपरीत मैथुन या अप्राकृतिक मैथुन आदि रूपों में ही रामायण, महाभारत और हिंदू देवी-देवताओं की व्याख्याएँ देने, समझाने का मन हो, तो इसे भी मानो कि यह भी एक पाठ है। क्योंकि 'लोग कहते हैं'। यहाँ मनमानी यह है कि इसे अपनी मानस-कल्पना न कहकर भारतीय परंपरा का ही कोई वैकल्पिक पाठ बताया जाता है। इसलिए 'लोग कहते हैं' जैसे गोल-मटोल जुमले उपयोग किए गए हैं।

अन्यथा वेंडी कह सकती थीं कि अमुक स्थान पर, अमुक काल में अमुक पुस्तक या लोक-कथा में सीता को लक्ष्मण से प्रेम करता दिखाया गया है आदि। या गणेश के मुँह पर सूँढ़ को शिथिल शिश्न (लिंप फैलस) का प्रतीक बताया गया है।[6] मगर वेंडी और उनके निर्देशित शिष्यों ने जग-ज़ाहिर हिंदू विविधता की आड़ में हिंदू इतिहास में अपनी सेक्स-फंतासी डालकर उसे 'वैकल्पिक इतिहास' बनाने की कोशिश की है।

वेंडी की बातों और प्रस्तुति में अंतर्विरोध भी है। एक ओर, वे 'वाल्मीकि' के हवाले से ही तरह-तरह की बातें कहती हैं। लेकिन फिर यह भी कहती हैं कि कोई 'वाल्मीकि' हुआ भी था या नहीं। उनके ही शब्दों में, 'वाल्मीकि' के हुए होने का 'कोई पक्का पता नहीं।' उसी तरह, एक ओर राम, सीता, दशरथ, रावण आदि के चित्र-विचित्र संबंधों का मनमाना आख्यान करके, दूसरी ओर यह भी कहती हैं कि राम समेत पूरी रामायण एक गल्प है। कोई इतिहास नहीं। अर्थात् हिंदू धर्म-समाज, पूर्वजों को सेक्स-विकृत या केंद्रित कहने में 'रामायण', 'महाभारत', आदि सब प्रमाणिक स्त्रोत हो जाता है, मगर उन्हीं से यदि कोई सांस्कृतिक, दार्शनिक गौरव का निष्कर्ष निकालना चाहे, तब वही रचनाएँ कोरा गल्प बताई जाती हैं! यह तो अकादमिक सुसंगति नहीं है।

अकादमिक कसौटी पर वेंडी डोनीज़र के लेखन में और भी कमज़ोरियाँ हैं। सबसे पहले तो, हिंदू धर्म पश्चिमी 'रिलीजन' की तरह का धर्म-मत या मतवाद नहीं है जिसे केवल पुस्तक को केंद्र में रखकर जान-समझ लिया जाए। सिद्धांतत: वेंडी डोनीज़र यह मानती भी हैं कि हिंदू धर्म वैसा 'रिलीजन' नहीं है। अपनी 'टेक्सचुअल सोर्सेज फॉर द स्टडी ऑफ हिन्दुइज़्म' (1988) के आमुख में उन्होंने यह लिखा भी है कि हिंदू धर्म किताबी सिद्धांतों की शुद्धता (आर्थोडॅक्स) की बजाए आचरण, व्यवहार की शुद्धता (ऑर्थोप्रैक्स) पर आधारित है।[7] फ़िर भी, हिंदू धर्म-संस्कृति-इतिहास पर वेंडी का संपूर्ण लेखन हिंदू जनता के सदियों के व्यवहार को दरकिनार कर, केवल पुस्तकों पर आधारित है। वह भी पसंदीदा निष्कर्षों वाली, बाहरी, यानी

गैर-बुनियादी, यहाँ तक कि जैसी-तैसी हल्की पुस्तकों पर भी।

हिंदू धर्म-संस्कृति पर वेंडी के लेखन की तीसरी बड़ी गड़बड़ी है कि उन्होंने द्वितीयक, तृतीयक और नितांत अप्रमाणिक स्त्रोतों को समान महत्व देते हुए अपने निष्कर्ष रखे हैं। बल्कि उनके लेखन की अधिकांश आधार-सामग्री भारत से बाहर की, अर्थात् शोध की भाषा में कहें तो दूसरे, तीसरे दर्जे की सामग्री पर आधारित है।

उदाहरण के लिए, 'द हिंदूज़ – एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री (2009) के अंत में दी गई लगभग दो हज़ार पुस्तकों, लेखों की सूची या बिब्लियोग्राफी में लगभग 90 सामग्री विदेशी है।[8] केवल यही तथ्य यह दिखाने के लिए काफी है कि पुस्तक मूल-स्त्रोतों पर नहीं, दूसरों, तीसरों, चौथों के विचारों पर आधारित होकर लिखी गई है। उन विचारों पर, जिनकी प्रमाणिकता जानने, पहचानने की भी विशेष फिक्र नहीं की गई। न उन्हें परखने, जाँचने का कोई उपाय पाठक के पास है। ऐसा लेखन लापरवाह, अहंकारी मानसिकता का संकेत करता है। जो पाठक से माँग करता है कि लेखिका की बातों, चुनावों, निष्कर्षों को स्वयं-सिद्ध मानकर चले। वेंडी में यह अहंकार और लापरवाही औपनिवेशिक, नस्ली, विचारधारात्मक है या/और लंबे समय से 'क्वीन ऑफ़ हिंदुइज़्म' की पद्वी से उपजी है, यह कहना कठिन है। किंतु उनमें यह लापरवाही और अहंकार है अवश्य।

अनेक स्थलों पर द्वितीयक स्त्रोतों के मूल स्त्रोत का उल्लेख न करना भी एक गंभीर अकादमिक कमज़ोरी है। इससे पाठक को पता नहीं चलता कि उस द्वितीयक स्त्रोत ने भी किसी प्रमाणिक सामग्री पर अपने को आधारित किया, या इसी तरह किसी और, किसी और द्वितीयक, तृतीयक स्त्रोत का ही सुविधाजनक सहारा लिया है। यह अकादमिक शोध नियमों की, बल्कि स्वयं शिकागो विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत मानक शोध दिशा-निर्देशों की भी अवहेलना करता है। किसी महत्वपूर्ण उद्धरण को उद्धृत करने में मूल स्त्रोत के संदर्भ या प्रसंग का उल्लेख तथा उस उद्धृत लेख का कोई परिचय देना भी अनिवार्य-सा होता है। ताकि पता रहे वह कोई विषय का विद्वान है, या नेता, या अखबारी पत्रकार। ऐसा न करने से पाठक को सुनी-सुनाई और प्रमाणिक के बीच अंतर करने का मौका नहीं बचता, इस तरह वह चकमा खाता है। गंभीर विद्वानों से ऐसी आशा नहीं की जाती।

यह कुछ वैसी ही बात हुई, जैसे (कल्पना करें) कोई इतिहासकार अपनी पुस्तक में उद्धरण-चिह्न के अंतर्गत लिखे कि ''एक बार गाँधीजी ने कस्तूरबा को जूते से पीटा था।'' मगर, जब पाठक इस उद्धरण का स्त्रोत देखना चाहे, तो उसे मात्र इतना मिले – 'जॉन स्मिथ, ए बायोग्राफ़ी ऑफ़ गांधी, पेज 56.' बस। अब इससे कुछ पता नहीं चलता कि उस दूसरे लेखक, जॉन स्मिथ को वह जानकारी कहाँ से मिली? यदि उसे गांधीजी के किसी पुत्र या सहयोगी ने अपनी प्रत्यक्षदर्शी घटना बताया हो तो एक बात होगी। किंतु यदि स्मिथ ने भी वह किसी अब्राहम के लेख से, और उस अब्राहम ने भी किसी विलियम के उपन्यास जैसी पुस्तक या किसी नेता के भाषण या अखबारी टिप्पणी से ली हो... और इस तरह पूरी बात बिना किसी ठोस आधार के दिखे। तब मामला कुछ और हो जाएगा। किसी के मनगढ़ंत

अनुमान या नशेड़ी की गप्प जैसी उक्तियों को भी इतिहास की अकादमिक पुस्तक में दे देना विद्वेषपूर्ण लेखन ही माना जाएगा।

वेंडी और उनके अनुयायी लेखकों ने राम-सीता, काली, गणेश, शिव, पार्वती आदि को तथा पुराण, महाभारत के प्रसंगों अथवा हिंदू पर्व-त्यौहारों को सेक्स-क्रियाओं, विकृतियों, हिंसा और विचित्रताओं से आरोपित करने में अनेक स्थानों पर इसी तरह के स्त्रोत, संदर्भ दिए हैं। एक उदाहरण देखें, अपनी पुस्तक 'द हिंदूज़ – एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री' के चौबीसवें अध्याय में वेंडी एक लंबा उद्धरण देती हैं –

"एक रात जब सीता और राम साथ-साथ लेटे हुए थे, सीता ने बड़े लगाव की चर्चा की। उसने कहाँ, 'वहाँ वह अकेला सो रहा है। कौन सी चीज़ उसे औरत से अलग रखती है? वह शादी क्यों नहीं करना चाहता?' इस बात से राम के माथे में संदेह पैदा हुआ। सीता मज़े से सो गई, मगर राम पूरी रात इस मामले पर तरह-तरह की कल्पना करता हुआ जगा रह गया। सुबह सवेरे उसने लक्ष्मण को उसके एकांत महल से बुलवा भेजा और एकाएक पूछा, 'क्या तुम सीता से मुहब्बत करते हो?' लक्ष्मण को ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी और वह अपने भाई की ओर आँख भी नहीं उठा सका। वह बड़ी देर तक धरती पर नज़र गड़ाए शर्म से डूबा रहा। लक्ष्मण ने लकड़ियाँ इकट्ठा कर बड़ी सी आग जलाई और चिल्लाया, 'इन लकड़ियों में आग लगा दो और अगर मैं बेदाग और बेकसूर हूँ तो मैं नहीं जलूँगा।' वह अपनी बाँह में एक चीखते हुए बच्चे को लेकर आग पर चढ़ गया। दोनों में से किसी को आँच नहीं लगी। फिर उसने राम और सीता को वहीं छोड़ दिया और नहीं लौटा, हालाँकि सीता उसे फुसलाकर वापस करने की कोशिश करती रही।[9]

इतना लंबा उद्धरण वेंडी ने इसी तरह अपने टेक्सट् में अलग करके, प्रमुखता से रखा है। चूँकि उद्धरण है, यानी किसी और के लेखन से लिया है, अतः इसका स्त्रोत भी बनता था। तो अध्याय के एंडनोट में, वेंडी ने इस उद्धरण का स्त्रोत-संदर्भ देते हुए यह दिया है, 'एल्विन, मिथ्स ऑफ़ मिड्ल इंडिया, 65-67'। बस, केवल इतना। अब पाठक सोचता रहे कि कौन है एल्विन और कहाँ से दिया उसने वह विवरण? इस तरह के संदर्भ संदिग्ध होते हैं, क्योंकि उनकी प्रमाणिकता देखने-परखने का पाठक के पास शायद ही कोई उपाय रहता है। वह मजबूर किया जाता है कि वेंडी के चयन, प्रस्तुति और निष्कर्ष को चुपचाप मान कर चले। बल्कि कई जगहों पर तो वेंडी ने किसी संदर्भ के बिना भी चित्र-विचित्र व्याख्या या निष्कर्ष थोपने की कोशिशें की हैं।

इतिहास और राजनीति जैसे विषय में ऐसा लेखन अहंकारी के साथ-साथ प्रोपेगंडा मानसिकता दर्शाता है। यानी, तथ्यों या गल्पों का मनमाना चयन और कोरी घोषणाएँ। जैसे, वेंडी डोनीज़र के अनुसार भारत में 'होली' के त्यौहार पर एक-दूसरे पर रंग डालना खून का संकेत है, जिसका उपयोग लगभग पिछली सदियों में किया जाता रहा होगा।'[10] या, स्त्रियों के माथे पर कुमकुम-बिंदी लगाना भी 'रजस्त्राव वाले रक्त' का प्रतीक है या, महाकाली की उग्र मुद्रा 'शिश्न वाली देवी' (गॉडेस विद् ए पीनिस)[11] की झलक है। अथवा, श्रीकृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा 'समलैंगिक आकर्षण' का आवाहन है। शिव अनुष्ठान-पूर्वक

बलात्कार का (रिचुअल रेप) का देवता या, गणपति का मोदक-प्रेम उनके मुख-मैथुन प्रेमी होने और उनकी सूँढ़ 'शिथिल शिश्न' का प्रतीक है। या, रामकृष्ण परमहंस काम-विकृति से ग्रस्त थे और उनका विवेकानन्द के प्रति समलैंगिक सेक्स-प्रेम था, आदि आदि।

वेंडी डोनीज़र की एक सहयोगी प्रोफ़ेसर सेरा काल्डवेल के एक लेख का शीर्षक ही इस तरह की विचित्र विद्वता की पर्याप्त झलक देता है – "ब्लडथर्स्टी टंग एंड द सेल्फ-फीडिंग ब्रेस्ट – होमोसेक्सुअल फेलासिया फैंटेसी इन ए साउथ इडियन रिचुअल ट्रेडिशन।" यह देवी काली पर अकादमिक लेखन का शीर्षक है, जिसमें हिंसा, रक्त, रज, शिश्न, वीर्य, स्तन का दूध, मख-मैथुन, गर्भ और गर्भवती पेट आदि सबको मिला-जुलाकर कैसा कुत्सित मिश्रण बनाया है – यह बिना पढ़े अविश्वसनीय लगेगा कि कोई ऐसी कल्पनाएँ कर सकता है![12]

ऐसी विचित्र व्याख्या रखने की ज़िद में वेंडी और उनके पट्ट-शिष्यों ने कई प्रसंगों में संस्कृत शब्दों का भी मनमाना अर्थ किया है। ऐसे मनमाने अर्थ किए जाने को कई पश्चिमी संस्कृतज्ञों ने भी सरासर गलत माना है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध संस्कृत-वेत्ता माइकेल वित्जेल ने 18 श्लोकों वाले केवल एक संस्कृत गान के वेंडी द्वारा किए गए अंग्रेज़ी अनुवाद में 43 गलतियाँ बताई हैं।[13] यह सदैव अज्ञानवश ही नहीं, जान-बूझकर की गई विकृति भी लगती है। वित्जेल ने वेंडी डोनीज़र द्वारा किए गए ऋग्वेद के अनुवाद (पेंग्विन, 1981) को भी 'पाराफ्रेज़िंग', यानी अपने अर्थ में प्रस्तुत किया गया बताया है, जो एक बड़ा गंभीर आरोप है। साथ ही, वेंडी के लेखन में क्रमवार वाक्यों में अर्थ-असंबद्धता भी है।[14] इन सब से दिखता है कि वेंडी में हिंदू ग्रंथों में लिखी बातों को अपना मनमाना अर्थ देने की प्रवृत्ति बड़ी विकट और पुरानी है।

वेंडी के लेखन की सबसे बड़ी कमज़ोरी है अपने तयशुदा निष्कर्ष के अनुरूप सामग्री ढूँढना, न कि सामग्री, लेखक, शोधकर्ता आदि की प्रमाणिकता के आधार पर। उदाहरण के लिए, वेदों पर तीस साल से लिखते हुए भी, वेंडी की इस पुस्तक के अंत में दी आधार सामग्री सूची (बिब्लियोग्राफी) की सैकड़ों पुस्तकों, लेखों में श्री अरविंद के क्लासिक ग्रंथ 'वेद रहस्य' (सीक्रेट ऑफ़ वेदा) का नाम नहीं। न ही स्वामी विवेकानन्द की किसी रचना का। स्वामी दयानन्द सरस्वती का तो किसी रूप में उल्लेख तक नहीं है। जबकि शशि थरूर, कुमकुम राय, जैसे लेखकों की पुस्तकें उनकी सूची में हैं। यह साफ-साफ दिखाता है कि वेंडी डोनीज़र का लेखन सामान्य किस्म के वर्तमान टिप्पणीकारों पर अधिक आधारित है। वह कोई मौलिक शोध नहीं है।

हर हाल में, वेंडी द्वारा स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, श्री अरविंद, जैसे महान समकालीन हिंदू मनीषियों को गोल कर किया जाना बड़ा महत्वपूर्ण तथ्य है। इसके दो ही अर्थ हो सकते हैं। एक, वेंडी को *श्री अरविंद* जैसे दुर्धर्ष आधुनिक मनीषी के महत्तम ग्रंथों की जानकरी नहीं। अथवा उन्होंने अपने पूर्व-निर्धारित, पसंदीदा निष्कर्षों के अनुरूप मामूली लेखों, छिछोरी टिप्पणियों, वामपंथी प्रोपेगंडा, अखबारी कतरनों और मनतरानियाँ तक को अधिक उपयोगी समझा। इसलिए *दयानन्द, विवेकानन्द, श्री अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, रायकृष्ण दास, रामस्वरूप,*

गोविन्दचन्द्र पाण्डेय, जैसे अनेकानेक महान हिंदू मनीषियों की टीकाओं, व्याख्याओं को नोटिस के लायक भी नहीं समझा। उसे पढ़ना-समझना तो दूर रहा। हिंदू धर्म, संस्कृति और समाज का वृहत इतिहास लिखते हुए दयानन्द, विवेकानन्द, श्री अरविन्द जैसे दार्शनिकों की खुली उपेक्षा करने में यह घमंड भी है कि 'हम तुम्हारे धर्म के बारे में तुमसे ज़्यादा और सही जानते हैं।'

इन बातों, प्रवृत्तियों का अकादमिक अर्थ में अंतिम अर्थ यही निकलता है, कि वेंडी डोनीज़र हिंदू धर्म संस्कृति की वैसी प्रमाणिक विद्वान नहीं, जैसा माना जाता रहा है। इस की पुष्टि इस से भी होती है कि अपने लेखन की हर आलोचना को वे भारत के एक राजनीतिक दल के बट्टे-खाते में डालकर, मामले का राजनीतिकरण करके बच निकलती हैं। वे अपने आलोचकों को थोक-भाव में सड़क-छाप भीड़ ('दिस क्राउड', 'हिंदुत्वा टाइप्स') जैसे नीच समझने के सिवा और कुछ नहीं मानतीं।[15] यह हू-ब-हू भारत के मार्क्सवादी लेखकों, प्रचारकों वाली शैली है जिस में प्रतिष्ठित विद्वानों को भी 'सस्ती शोशेबाजी करने वाला पत्रकार' और 'कोई दुकानदार' जैसे अपमानजनक विशेषणों से डिसमिस किया जाता था। मानो, ऐसे तुच्छ, अनुपयुक्त लोगों की बात का जवाब क्या देना। उसी अंदाज़ में वेंडी भी संजीदा भारतीय आलोचकों को 'दिस क्राउड' या 'हिंदुत्वा टाइप्स' जैसे अपमानजनक संकेत से देखती हैं। यानी, आलोचकों की बातों का जवाब देने के बजाए उन्हें ऐरे-गैरे बताकर नोटिस लायक ही न समझने का अंदाज़ रखना।

इस से यही प्रतीत होता है कि वेंडी डोनीजर के पास अपनी आलोचनाओं का कोई बौद्धिक उत्तर नहीं। इसीलिए, वे लांछन-तकनीक तथा अकादमिक पदों के अहंकार का बार-बार उपयोग करती हैं। अन्यथा प्रो. एस. ए. बालगंगाधार, कोएनराड एल्स्ट, राजीव मल्होत्रा, अदिति बनर्जी, आदि जैसे विद्वानों, लेखकों को किसी राजनीतिक दल का एजेंट जैसा समझने का संकेत शोभनीय नहीं कहा जा सकता। मतभेद रखने वाले विद्वानों को लांछित करना बौद्धिक दुर्बलता ही दिखाता है।

वेंडी डोनीजर के लेखन की एक अन्य बुनियादी दुर्बलता यह है कि उन की मुख्य प्रेरणा अकादमिक, बौद्धिक नहीं बल्कि राजनीतिक प्रतीत होती है। यह स्वयं उनके ही शब्दों में कई स्थलों पर, कई प्रसंगों में स्पष्ट दिखता है। उदाहरण के लिए, *'द हिंदूज़- एन अल्टरनेटिव हिस्टरी'* के प्रकाशन के समय अंग्रेज़ी साप्ताहिक *आउटलुक* (26 अक्तूबर 2009) वाले साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता शीला रेड्डी ने उन से पूछा, "आप अपनी पुस्तक को 'एन अल्टरनेटिव हिस्टरी' क्यों कहती हैं?" इस के उत्तर में वेंडी का उत्तर था, "मैं भाजपा वाले इतिहास पाठ की तुलना में एक वैकल्पिक इतिहास का पाठ भी दिखाना चाहती थी– वह पाठ जिसमें कहा जाता है कि बाबर वाली मस्जिद किसी राम मंदिर जैसी चीज़ के ऊपर बनी थी या बंदरों ने श्रीलंका तक पुल बनाया था।"[16]

यह उसी मानसिकता का दुहराव है जो यहाँ मार्क्सवादी इतिहासकारों में रहा है वे भी अपने नए इतिहासलेखन का सारा दावा 'शोषितों की दृष्टि से सारा इतिहास लिखने' तथा 'हिंदू सांप्रदायिकता वाले पाठ' के विपरीत कोई 'सेक्यूलर, प्रगतिशील' पाठ लिखने का दावा करते थे। चाहे वास्तव में उन्होंने भी पहले से जाने हुए

तथ्यों की तोड़-मरोड़ करने के सिवा शायद ही कुछ नयी जानकारी पाने का प्रयत्न किया। उनमें भी राजनीति प्रधान थी, वेंडी में भी है। सत्य, तथ्य, प्रमाण की चिंता या दावा भी, मार्क्सवादी भी नहीं करते थे। 'इर्रेस्पेक्टिव ऑफ़ एविडेंस', उन्हें अयोध्या विवाद पर एक पक्षपाती, राजनीतिक प्रचार करना ही था। वेंडी भी उसी तरह ब्राह्मणों और भाजपा के विपरीत 'वैकल्पिक' इतिहास लिखने का ध्येय रखती रही हैं।

किंतु समस्या यह है कि भारतीय दृष्टि से लिखे सारे इतिहास को, जो वेंडी को पसंद नहीं, उस सबको 'भाजपा वाला इतिहास पाठ' कहना न केवल निराधार, बल्कि क्षुद्र गाली-गलौज है। यह भी मार्क्सवादी तकनीक से मिलती है, जिसमें मत-वैमन्य रखने वाले हरेक लेखक को सदैव 'अमेरिकी एजेंट' या 'पूँजीपतियों का दलाल' कहा जाता था। कोई स्वतंत्र लेखक, इतिहासकार, विचारक भी होता है, इसे मार्क्सवादी सिरे से ठुकराते हैं। उनके लिए सभी नापसंद इतिहास लेखक केवल 'हिंदू सांप्रदायिक' होता है, उसी तरह वेंडी के लिए हिंदुओं का वह सारा इतिहास जो सहज भारतीय दृष्टि से लिखा गया है, वह 'भाजपा वाला इतिहास पाठ' है। मानो सुग्रीव की वानरी-सेना ने लंका तक पुल बनाया, ऐसा लिखते हुए 'वाल्मीकि', 'तुलसीदास' और 'कम्बन' वस्तुतः भाजपा के लिए लिख रहे थे! यदि वेंडी का मतलब यह नहीं, तो क्या भाजपा ने कोई हिंदुओं के इतिहास की पुस्तक प्रकाशित की है जिसका वैकल्पिक पाठ करना वेंडी को ज़रूरी लगा!

अकादमिक, बौद्धिकता की बजाए राजनीतिक अधीरता वेंडी के वक्तव्यों में ही नहीं, लेखन में भी जहाँ-तहाँ स्वतः दिखती रहती है। वे बार-बार, अकारण और प्रसंगहीन छीछालेदर पर उतरती रहती हैं। चाहे घोषित विषय, अध्याय या शीर्षक कुछ भी हो। यह मानसिकता कुछ भी लिखते हुए किसी बिंदु-विशेष की व्याख्या, अथवा कोई नया तथ्य या पहलू रखने की बजाए सदैव किसी प्रत्यक्ष या अदृश्य राजनीतिक निशाने को साधती रहती है। यह प्रवृत्ति भी वामपंथी लेखकों से मिलती-जुलती है। किसी भी विषय, बिंदु पर लिखते, बोलते उनकी मानसिकता में बुर्जुआधअमेरिका पर लांछन और कम्युनिज़्म व सोवियत संघ की प्रशंसा करने की प्रवृत्ति अनायास छलकती, झलकती रहती है। उसी तरह की छलक, झलक वेंडी डोनीज़र के लेखन में भी है। उनका लेखन हिंदू धर्म, संस्कृति और समाज को हीन, धूर्त और गया-गुज़रा दिखाने की प्रेरणा से सराबोर लगता है।

वेंडी के लेखन को उनके विचारों से मिलाकर जितना भी पढ़ें, यह किसी न किसी रूप में बार-बार दिखता है। उनमें विद्वत से अधिक राजनीतिक प्रेरणा है। इसलिए वे खिल्ली उड़ाते अंदाज़ में हिंदू शास्त्रों, ग्रंथों का जबरन फ्रायडीयन पाठ करती हैं, जहाँ हर चीज़ के मूल में सेक्स-इच्छा, सेक्स-विकृति या ऐसी फंतासी है।

अंततः एक और बिंदु विचारणीय है। वेंडी डोनीज़र हिंदू धर्म, इतिहास और देवी-देवताओं पर अपने लेखन को मनोविश्लेषण (साइको-अनालिटिकल) बताती हैं। पर *पहले* तो उन्होंने मनोविश्लेषण का कोई व्यवस्थित प्रशिक्षण नहीं लिया है। यह उन्होंने राजीव मल्होत्रा द्वारा पूछने पर स्वीकार भी किया है। *दूसरे*, दिवंगत व्यक्तियों (जैसे-रामकृष्ण, विवेकानन्द) के मनोविश्लेषण नहीं किए जा सकते, यह स्वयं मनोविश्लेषक

कहते हैं। *तीसरे*, देवी-देवताओं और प्राचीन शास्त्रों, ग्रंथों का भी 'मनोविश्लेषण' नहीं होता। वैसा करने का दावा ही बचकाना, हास्यास्पद है। *चौथे*, इसी तरह का कथित मनोविश्लेषण वेंडी डोनीज़र और उनके शिष्यों ने ईसाइयत और इस्लम के ग्रंथों, विभूतयों का कभी नहीं किया है। जबकि वे 'धर्म-अध्ययन विभाग' से जुड़े हैं, यानी जिसमें सभी धर्मों पर शोध, अध्ययन आदि होता है। *पाँचवे*, जब स्वयं वेंडी और उनके सहयोगियों की उसी तर्ज़ पर 'मनोविश्लेषणात्मक' समीक्षाएँ की गईं, तो इसे उन्होंने अनुचित और शरारतपूर्ण कहकर बुरा माना। जैसे, यह समीक्षा कि ऐसे लेखकों के अपने अल्पज्ञान, जीवन-अनुभवों, कॉम्पलेक्सों और फैंटसियों का प्रभाव उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों में है। जबकि वैज्ञानिक मनोविश्लेषण के आवश्यक पूर्वाधारों की कसौटी पर यह समीक्षा अधिक खरी उतरती है। क्योंकि लेखक, लेखिकाएँ प्रत्यक्ष मौजद हैं। किंतु दूसरों का, दिवंगत महापुरुषों, यहाँ तक कि शिव, काली, गणेश, पार्वती, कृष्ण जैसे देवी-देवताओं का 'मनोविश्लेषण' कर देने का अहंकार रखने वाले स्वयं अपने मनोविश्लेषण पर नाराज़ होने लगते हैं। यह तो स्पष्ट अंतर्विरोधों और हल्कापन दोनों ही है।

इसीलिए, वेंडी डोनीज़र द्वारा लिखा हुआ हिंदू इतिहास तथा हिंदू धर्म, दर्शन, परंपरा आदि पर उनकी विशाल सामग्री की मूल्यवत्ता संदिग्ध है। केवल प्रसिद्धि और बड़ी संस्थाओं, पदों के बल पर उन्हें प्रमाणिक मानना भूल होगी। हमारे सामने 'सोवियत अकादमी ऑफ सोशल साइंसेज़' के सैकड़ों सर्वोच्च एकेडमीशनों का उदाहरण है, जिन्हें उसी बल पर दशकों तक बड़ा विद्वान माना जाता रहा था। जबकि वे मुख्यतः बने-बनाए निष्कर्ष दुहराने वाले पार्टी-प्रचारक मात्र ही थे। वेंडी डोनीज़र के वक्तव्य हमें उन्हीं विद्वानों की याद दिलाते हैं।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

[1]वेंडी, डोनीज़र. *ह्वेन ए लिंगम इज़ जस्ट ए गुड सिगार*, जेफ्री कृपाल एवं टी.जी. वैद्यनाथन (सं.), विष्णु ऑन फ्रायड्स डेस्क (नयी दिल्ली – ऑक्सफ़ोर्ड प्रैस, 1999), पृ. 279, कृष्णन रामास्वामी एवं अन्य (सं.) *इनवेडिंग द सेक्रेड* (नयी दिल्ली – रूपा एंड कं., 2007) में उद्धृत, पृ. 485.

[2]____. *ओ' फ़्लाहार्टी,* सं. और अनुवादित, *टेक्सचुअल सोर्सेज़ फॉर द स्टडी ऑफ़ हिंदुइज़्म* (मैनचेस्टर – मैन्चेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988), पृ. 15-17, 103-06.

[3]शीला, रेड्डी द्वारा वेंडी डोनीज़र का इंटरव्यू, आउटलुक (अंग्रेज़ी साप्ताहिक), नयी दिल्ली, 26 अक्तूबर, 2009

[4]वही.

[5]वही.

[6]यह वेंडी के निर्देशन में पी.एच.डी., प्राप्त पॉल कोर्टराइट की पुस्तक *गणेशा – लार्ड ऑब्सटेकल्स, लॉर्ड ऑफ़ बिगिनिंग्स* (न्यूयॉर्क – ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1985), पृ. 121. कृष्णन रामास्वामी एवं अन्य (सं.) *इनवेंडिंग द सीक्रेट* (नयी दिल्ली – रूपा एंड कं., 2007) में उद्धृत, पृ. 53. कोर्टराइट की यह प्रसिद्ध, पुरस्कृत पुस्तक गणेश को समलैंगिक, हिजड़ा, मुख-मैथुन प्रेमी और मातृ-आसक्ति समेत विविध काम-विकृतियों से ग्रस्त बताती है.

[7]वेंडी, डोनीज़र. *ओ 'फ़्लाहार्टी*, सं. और अनुवादित, *टेक्सचुअल सोर्सेज़ फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ हिंदुइज़्म* (मैनचेस्टर – मैन्चेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988), पृ. गप.

[8]*वेंडी, डोनीज़र. द हिंदूज – एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री* (नयी दिल्ली – पेंग्विन वाइकिंग, 2009), पृ 929–79.

[9]वही, पृ. 669–70.

[10]माइक्रोसॉफ़्ट एनकार्टा पर *'हिंदुइज़्म'* पर वेंडी डोनीज़र की प्रस्तुति से। अदिति बैनर्जी, द्वारा *ओह, बट यू डू गेट इट राँग!*, आउटलुक (अंग्रेज़ी साप्ताहिक), नयी दिल्ली, 28 अक्तूबर 2009, इंटरनेट संस्करण.

[11]सेरा, काल्डवेल. द *ब्लडथर्स्टी टंग एंड द सेल्फ़-फ़ीडिंग ब्रेस्ट – होमोसेक्सुअल फ़ेलासियो फैंटेसी इन ए साउथ इंडियन रिचुअल ट्रेडीशन*, जेफ्री कृपाल एवं टी.जी. वैद्यनाथन (सं), विष्णु ऑन फ्रायड्स डेस्क (नयी दिल्ली – ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999), पृ. 343. कृष्णन रामास्वामी एवं अन्य (सं) इनवेंडिंग द सीक्रेट (नयी दिल्ली – रूपा एंड कं., 2007) में उद्धृत, पृ. 42–43.

[12]यह सब शिकागो विश्वविद्यालय के विश्व-प्रसिद्ध धर्म-अध्ययन विभाग में पढ़ाया जाता है। जिनके आधार पर अमेरिका में बच्चों, युवाओं के लिए टेक्स्ट-बुक लिखी जाती हैं। जिससे अबोध अमेरिकी और युवा, हिंदू धर्म और भारत के बारे में अपनी धारणाएँ बनाते हैं। वही लोग आगे अमेरिका नीति-निर्माता बनते हैं। जो अमेरिका-भारत संबंध तय करने में भी भागीदारी निभाते हैं। वेंडी डोनीज़र और उनके विद्ववत् संप्रदाय की ऐसी इंडोलॉजी का भारत और विश्व के लिए भी कितना महत्व है, इस बिंदु को भी प्रस्तुत प्रसंग में समझने की कोशिश करनी चाहिए.

[13]*चैलेंज टु वेंडी डोनीज़र्स संस्कृत*, कृष्णन रामास्वामी एवं अन्य (सं) *इनवेंडिंग द सेक्रेड* (नयी दिल्ली – रूपा एंड कं., 2007) में उद्धृत, पृ. 67.

[14]वही.

[15]शीला, रेड्डी द्वारा वेंडी डोनीज़र का इंटरव्यू, आउटलुक (अंग्रेज़ी साप्ताहिक), नयी दिल्ली, 26 अक्तूबर, 2009.

[16]वही.